(संक्षेपण - Synopsis)

राजी सेठ के साहित्य में नारी समस्याओं के विविध आयाम

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अन्तर्गत हिंदी विषय में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध का संक्षेपण

- : शोधछात्रा :-

अनिता विश्वनाथ चौधरी

लातूर

- : शोध निर्देशक :-

प्रा. डॉ. प्रदिप शिवराम सूर्यवंशी

हिंदी विभाग

दयानंद कला वरिष्ठ महाविद्यालय,

लातूर

मे - २०१९

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अन्तर्गत हिंदी विषय में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का संक्षेपण

राजी सेठ के साहित्य में नारी समस्याओं के विविध आयाम

शोध छात्रा का नाम :- ***अनिता विश्वनाथ चौधरी***

विषय : *हिंदी*

मो. नं.: *९७६५२२२२२५*

प्रवर्ग : *OBC*

पत्ता : *अंबाजोगाई रोड, लातूर.*

ई-मेल : choudharyanita20101989@gmail.com

शोध निर्देशक का नाम : ***प्रा. डॉ. प्रदिप शिवराम सूर्यवंशी***

महाविद्यालयाचे नाव : हिंदी विभाग,
दयानंद कला वरिष्ठ महाविद्यालय,
लातूर

मो. न. : ८२०८१९१३४६

ई-मेल : pradeeplatur4@gmail.com

राजी सेठ के साहित्य में नारी समस्याओं के विविध आयाम

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	अध्याय	अध्यायों के नाम
०१	प्रथम अध्याय	राजी सेठ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
०२	द्वितीय अध्याय	राजी सेठ के उपन्यासों की कथावस्तू
०३	तृतीय अध्याय	राजी सेठ के कहानियों की कथावस्तू
०४	चतुर्थ अध्याय	राजी सेठ के कहानी तथा उपन्यास में व्यक्त नारी समस्याओं के विविध आयाम
०५	पंचम अध्याय	राजी सेठ के कहानी तथा उपन्यास में व्यक्त शिल्पगत अध्ययन
०६	षष्ठम अध्याय	उपसंहार
	संदर्भ सुची	
	परिशिष्ठ	

राजी सेठ के साहित्य में नारी समस्याओं के विविध आयाम

विषय प्रवेश:

साहित्यिक विधाओं में उपन्यास तथा कहाणी विधा सबसे प्राचीन एवं श्रेष्ठ विधा है, उपन्यास शब्द उप तथा न्यास शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है निकट रखी हुई वस्तू साहित्य के अनुसार उपन्यास वह कृति है जिसे पढकर ऐसा लगे कि हम हमारी ही इसमें हमारी ही जीवन का प्रतिबिंब हमारी ही भाषा मे प्रयूक्त किया जाता है।

कथावस्तू उपन्यास का प्राण होता है इस की कथावस्तू जीवन से संबंधित होते हुये भी अधिकतर काल्पनिक होते है, किंतू काल्पनिक कथानक स्वाभाविक एव यथार्थ प्रतीत होते है।

हिंदी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है। आधुनिक हिंदी कहानी का आरंभ २० वी सदी मे हुआ। पिछले एक सदी में हिंदी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतीवाद, मनोविश्लेषनवाद, आचलिकता, आदि के दौर से गुजरते हुए सुदिर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धीयाँ हासिल की है।

राजी सेठ प्रसिध्द हिंदी उपन्यासकार है। उनका मानस आतंकित भावयंत्र या सम्वेदन तंत्र के ताने बाने को पुरी जटिलता के साथ रेखांकित करता है। उनका दर्शन यथार्थ कला और विचार का मनोवैज्ञानिक ढंग से संपुजन करता है। उनके शिल्प में भाषाशैली, शब्द संगीत, तरह-तरह के कोलाज या पेंटिग एक साथ उभरते है।

राजी जी साहित्य की सभी विधाओं में लिखती है। अबतक १३ कहानीसंग्रह और दो उपन्यास छपा चुके है। राजी जी का साहित्य कर्म क्लासिक और आधुनिक के अपुर्व समागम के लिए जाना जाता है। राजकमल प्रकाशन से १९८३ मे छपा उपन्यास तत्-सम इसी विशेषता के लिए जाना जाता है। सुक्ष्मता, सधनता, अथार्वतत्त और समृध्द रचना कौशल्य के लिए इस कृति को साहित्य में

विशेष स्थान मिला है। हाला ही में पिछले ६० वर्षो में छपी कालजयी कृतियों की सूची में तत्-सम को शामिल किया गया है। उनकी कृतियों पर कई शोधग्रंथ लिखे जा चुके है।

अंग्रेजी सहित राजी जी की कृतियों के बहुत सी भारतीय और युरोपीयन भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए है। दक्षिण, एशियन, अध्ययन केंद्र, शिकागो विश्‍वविद्यालय में ३० कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है। ९ वर्ष तक राजी जी ने साहित्यिक पत्रिका युगसाक्षी का सह संपादन भी किया है।

इसके साथ-साथ राजी जी के साहित्य में अनेक प्रकार की समस्याओं का भी अंकन किया गया है। जैसे विवाह समस्या, पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, प्रेम समस्या, नारी समस्या आदी.

विषय चयन की प्रेरणा :

हिंदी उपन्यास के अंतर्गत अनेक उपन्यास कृतियों का समावेश है। राजी सेठ जी का उपन्यास कृतियों में से तत्-सम उपन्यास कृति को ही लघुशोध प्रबंध का विषय बनाने की योजना बनाई गई और इस विषय पर मुझे एम.फिल. की उपाधि भी मीली है। एम.फिल. में प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय इस विषय के प्रति मेरा लगाव अधिकाधि बढता गया। तत्-सम में एक विधवा नारी वसुधा की व्यथा को व्यक्त किया गया है। इसकी संरचना घटनाओं से नही मन:स्थितियों से हुई है। उपन्यास की सघन बुनावट हर बार नए से नया अर्थ देने में सक्षम है। मुझे लगा की इस विषय के प्रति और उनके साहित्य के प्रति और भी अधिक विस्तृत रूप से अध्ययन करना चाहिए। तब मैंने अपने शोध कार्या के लिए राजी सेठ के साहित्य में नारी समस्याओं के विविध आयाम यह विषय लेने की मेरी रुची आदरणीय डॉ. प्रदिप सुर्यवंशी जी के पास व्यक्त की। उन्होने इस विषय पर चर्चा की तत् पश्‍चात विषय के प्रति मेरी लगन और जिज्ञासा को देखकर प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने कि अनुमती दी और मुझे राजी सेठ के साहित्य का विस्तृत रूप से अध्ययन करने के लिए सुअवसर प्राप्त हुआ।

शोध कार्य का महत्त्व :

राजी सेठ हिंदी साहित्य जगत में श्रेष्ठ साहित्यिक है। उनके उपन्यास में कहानियों में सामाजिक प्रतिबध्दता है मानव जीवन की यथार्थता है। मानव की आवश्यकताओं पर उन्होंने अपने उपन्यास तथा कहानियों में सर्वाधिक बल दिया है। उन्होंने अपने साहित्य में समस्याओं की गहराई में जाकर कला लेखन किया है। प्राय: उनके साहित्य में नारी स्वतंत्रता की समस्या, उदरभरण की समस्या, वैवाहिक समस्या, सामाजिक समस्या, पारिवारीक समस्या, आवास की समस्या आदि समस्याओं का अंकन हुआ है। इसको केंद्र में रखकर शोध कार्य पुरी करना है।

शोध की उपयोगिता :

राजी सेठ जी का व्यक्तित्व सहज एवं सरल है। उन्होंने अपने साहित्य में आम आदमी का जीवन विभिन्न स्तरों पर व्यक्त किया है। उनके उपन्यास तथा कहानीयों का विषय वस्तूव्यापक और सर्वांग सुंदर है। राजी सेठ जी ने मध्यमवर्ग की आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थिती के विश्लेषण के लिए लंबे भाषण नही दिये है, परिस्थिती विशेष से पर्दा उतार कर रख देते है। तत्-सम में नारी को अपने सामने आये हुई परिस्थिती को किस तरह से प्रतिकार कर समस्या को पार करना है इसका संदेश राजी सेठजी ने अपने साहित्य के माध्यम से दिया है।

इसतरह से उनके साहित्य में उन्होंने अनेक प्रकारके नारी पर बीती समस्याओं का चित्रण किया है। राजी जी ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री सशक्तिकरण का कार्य किया है। स्त्री को अपने पैरों पर खडा कर अपनी जगह स्थापित करने की प्रेरणा दि है। इस कारण ऐसे साहित्यकार पर शोध कार्य करना मेरी दृष्टी से महत्त्वपुर्ण होगा और हिंदी साहित्य के लिए भी उपयुक्त होगा।

प्रस्तुत शोधप्रबंध की रूपरेखा छॅ अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय :

राजी सेठ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) व्यक्तित्व :

i. जन्म
ii. बचपण
iii. शिक्षा
iv. विवाह
v. पारिवारीक जीवन
vi. नोकरी
vii. पुरस्कार एवं सम्मान

ख) कृतित्व

i. उपन्यास-
ii. कहानी

द्वितीय अध्याय

राजी सेठ के उपन्यासों की कथावस्तू

i. तत्-सम
ii. निष्कवच

तृतीय अध्याय

राजी सेठ की कहानीयों की कथावस्तू

i. अंधे मोड के आगे
ii. तीसरी हथेली
iii. यात्रा मुक्त
iv. दुसरे देशकाल में
v. सदियों में
vi. यह कहानी नही
vii. किसका इतिहास

चतुर्थ अध्याय

राजी सेठ के कहानी तथा उपन्यासों में व्यक्त नारी समस्यों के विविध आयाम

पंचम अध्याय

राजी सेठ के कहानी तथा उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

षष्ठम अध्याय

उपसंहार

शोध प्रबंध का अंतिम अध्याय उपसंहार है। इस अध्याय में राजी सेठ के साहित्य से संबंधित बातों पर चर्चा कर के अध्ययन निष्कर्ष देने का प्रयत्न होगा।

आधार ग्रंथ सूची :

राजी सेठ लिखित साहित्य :

अ.क्र.	ग्रंथ	प्रकाशक	वर्ष
०१	तत्-सम	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	१८८३
०२	निष्कवच	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली	१९९५
०३	अंधेमोडसे आगे	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	१९७९
०४	तिसरी हथेली	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	१९८१
०५	यात्रा मुक्त	नैशनल पब्लिक हाऊस, नई दिल्ली	१८८१
०६	दुसरे देशकालमे	नैशनल पब्लिक हाऊस, नई दिल्ली	१९९२
०७	सदियोंसे	वाग्देवी प्रकाशन, नई दिल्ली	१९९६
०८	यह कहानी	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली	१९९८
०९	किसका इतिहास	इंद्रप्रस्त प्रकाशन, नई दिल्ली	२००२

शोधकर्ता **शोध निर्देशक**

प्रा. अनिता विश्वानाथ चौधरी **डॉ. प्रदिप शिवराम सूर्यवंशी**